International Journal of Scientific Research in Science, Engineering and Technology
© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 6 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

शिक्षा में शिक्षकों के स्वभाव का प्रभाव

डॉ. रुचि हरीश आर्य
सह प्राध्यापिका, शिक्षाशास्त्र विभाग,
एम.बी.पी.जी. कॉलेज, हल्द्वानी

सारांश – यह सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया जाता है कि किसी राष्ट्र की गुणवत्ता उसके नागरिकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है, नगरिक की गुणवत्ता शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। नागरिकों की गुणवत्ता कई कारकों पर निर्भर करती है जैसे माता–पिता से विरासत में मिले गुंण और दृष्टिकोण, वित्तीय सहायता, भवन, किताबें, और स्कूल उपकरण, पाठ्यक्रम और निर्देश के तरीके आदि लेकिन, पूरी प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण कारक शिक्षक की गुणवत्ता है। शिक्षक का महत्व निर्विवाद है और शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक एक प्रमुख भूमिका निभाता है। यदि शिक्षक कमजोर और अप्रभावी है, तो शिक्षा कमजोर और अस्थिर हो जाती है। एक प्रभावी शिक्षक ही शैक्षिक सुधार में योगदान देता है। यदि किसी राष्ट्र के पास अच्छे, योग्य और कुशल शिक्षक हैं, तो आने वाली पीढ़ियों की नींव भी अच्छी हो जाती है। कक्षा शिक्षण में सुधार का कार्य वर्तमान समय की तत्काल आवश्यकता है। यह परिकल्पना की गई है कि शिक्षण का उद्देश्य सीखने और विद्यार्थियों के पारस्परिक संबंधों को बढ़ावा देना है। कक्षा के अंदर होने वाली घटनाओं का, शिक्षा की गुणवत्ता और मानकों पर सीधा प्रभाव डालती हैं। कक्षा प्रमुख स्थान है और शिक्षा के पाठ्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए कक्षा शिक्षण के सभी पहलुओं का अध्ययन बहुत आवश्यक है। हमारे विकासशील राष्ट्र के भविष्य को प्रभावित करने वाले शिक्षकों की भूमिका तेजी से महत्वपूर्ण होती जा रही है, और इसी लिए यह मुद्दा रिसर्च का विषय है।

मुख्य शब्द : शिक्षक, कक्ष शिक्षंण, पारिवारिक पृष्ठभूमि आदि।

परिचय– व्यावहारिक रूप से, प्रत्येक आयोग, जिसने देश की शैक्षिक समस्याओं की जांच की है, ने शिक्षक व्यवहार के संशोधन पर जोर दिया है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) ने कहा है–''हालांकि, यह निश्चित है कि चिंतन किए गए शैक्षिक पुनर्निर्माण में, सबसे महत्वपूर्ण कारक शिक्षक हैं, शिक्षक के व्यक्तिगत गुण, उसकी शैक्षिक योग्यता, उनका पेशेवर प्रशिक्षण और समुदाय व स्कूल में शिक्षक का स्थान आदि पर चिंतन करेने की आवश्यकता है। एक स्कूल की प्रतिष्ठा और जन समुदाय के जीवन पर इसका प्रभाव, हमेशा इसमें काम करने वाले शिक्षकों के प्रकार पर निर्भर

करता है। इसलिए प्राथमिकता के आधार पर, उनकी स्थिति में सुधार से संबंधित विभिन्न समस्याओं पर विचार किया जाना चाहिए''।

शिक्षा आयोग (1964–66) ने भी शिक्षकों को एक सम्मानजनक दर्जा दिया, जब उन्होंने देखा–''शिक्षा की गुणवत्ता और राष्ट्रीय विकास में इसके योगदान को प्रभावित करने वाले सभी कारकों में शिक्षकों की गुणवत्ता, योग्यता और चरित्र निस्संदेह सबसे महत्वपूर्ण हैं। शिक्षण पेशे में उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षकों की पर्याप्त संख्या प्राप्त करने, उन्हें सर्वोत्तम और पेशेवर ट्रेनिंक प्रदान करने और कार्य की संतोषजनक परिस्थिति, बनाने से ज्यादा महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं है।''

लोकतंत्र का मुख्य उद्देश्य शिक्षा है, जो न केवल सभी के लिए सुलभ होनी चाहिए, बल्कि शिक्षा और शिक्षंण के उद्देश्यों और तरीकों के बारे में नए सिरे से चिंतन की आवश्यकता है। इसीलिए भारतीय शिक्षा आयोग (1964–66) ने ठीक ही कहा है कि–''भारत का भविष्य उसकी कक्षाओं में तैया हो रहा है।'' आजकल हमारे देश में शिक्षा की गंभीर समस्या में से एक, स्कूली बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि का निम्न स्तर है। आजादी के बाद शिक्षा पर करोड़ों रुपये खर्च किए गए हैं, नए स्कूल खोलनें और उनमें पर्याप्त उपकरण और अन्य सुविधाएं प्रदान करने में। शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने के लिए, तरीकों में सुधार करना हेतु निर्मित समितियों और आयोगों पर विचार–विमर्श और पुनर्मूल्यांकन के लिए, लाखों रुपये खर्च किए गए हैं। इसके परिणामस्वरूप शैक्षिक क्षेत्र में बुद्धिजीवियों ने बेहतर पाठ्य–पुस्तकें, पाठ्यक्रम और शिक्षण सहायक सामग्री विकसित करने का प्रयास किया है। छात्रों की बेहतर उपलब्धियों के लिए बेहतर शिक्षण की तकनीकों एवं साधनों को विकसित करने के लिए काफी प्रयास किए गए हैं। लेकिन यह सब किसी काम का नहीं है और हम विकास के लक्ष्य को तब तक हासिल नहीं कर सकते जब तक स्कूलों के शिक्षकों को, प्रभावी और कुशल तरीके से शिक्षण का कार्य करने के लिए नहीं कहा जाता है।

हैरिस (1960) इस बात का समर्थन करते हैं कि सीखना, कक्षा में पाए जाने वाले शिक्षक–छात्र संबंधों पर आधारित है। संबंध दो तरह के हैं, एक तो शिक्षक और छात्रों के बीच की बातचीत से संबंधित है और दूसरा स्वयं छात्रों के बीच बातचीत से संबंधित है। यद्यपि शिक्षा के अधिकांश सिद्धांत ''बालकेन्द्रित'' शिक्षा पर अधिक बल देते हैं, जिसमें शिक्षक की भूमिका को निष्क्रिय नहीं माना जा सकता है। शिक्षक को शिक्षक और छात्रों के बीच सौहार्दपूर्ण संपर्क स्थापित करने लिए सक्रिय भूमिका निभानी होती है। कक्षा में शिक्षक अपने 'कक्षा व्यवहार' का गठन करता है। चूंकि कक्षा में शिक्षक की प्राथमिक जिम्मेदारी, बच्चों की सीखने की गतिविधियों का मार्गदर्शन करना है, प्रत्येक शिक्षक कक्षा में सिखाने हेतु विशेष व्यवहार की एक रणनीति अपनाता है। चूंकि वह बच्चों को कक्षा की परिस्थितियों में, सीखने में मदद करता है, शिक्षक एक नेता के रूप में, बच्चों के एक

समूह से बातचीत करता है। इस बातचीत की प्रक्रिया में, वह कभी–कभी, जानबूझकर और कभी–कभी अनजाने में, नियोजित व्यवहार के साथ अथवा बिना योजना के, लेकिन अक्सर, अपने व्यवहार और उसके प्रभाव के बारे में जाने बिना, बच्चों को प्रभावित करता है। सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थियों पर शिक्षकों के प्रभाव का महत्वपूंण असर होता है और इस कारण से, उसके व्यवहार का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है। शिक्षण के कार्य शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच पारस्परिक संपर्क की ओर ले जाते हैं, और इंटरचेंज को ही शिक्षण कहा जाता है (फ्लैंडर्स, 1970)। पारस्परिक संपर्क या तो मौखिक भाषंण द्वारा या शारीरिक संकेतों द्वारा बनाए रखा जा सकता है। इस प्रकार कक्षा में शिक्षक के व्यवहार को आगे दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। मौखिक और गैर मौखिक।

मौखिक शिक्षंण व्यवहार

मौखिक व्यवहार की स्थिति में शिक्षक और छात्र कक्षा में बोलकर अपने विचारों का आदान–प्रदान करते हैं। अभिव्यक्ति, मौखिक, लिखित या प्रतीकात्मक रूपों में की जाती है। आमतौर पर शिक्षक व्यवहार में मौखिक व्यवहार प्रबल होता है। स्किनर ने मौखिक व्यवहार को बड़े परिप्रेक्ष्य में समझाया है। उनके अनुसार मौखिक व्यवहार में वह सभी प्रतिक्रयाऐं शामिल हैं जो दूसरों को किसी भी तरह से प्रभावित करती हैं। एक शिक्षक अपने शिक्षण में तीन प्रकार के मौखिक व्यवहार का उपयोग करता है। पहला संज्ञानात्मक पहलू से संबंधित है, जैसे व्याख्यान देना, परिभाषित करना, समझाना और स्पष्ट करना। दूसरा भावनात्मक पहलू से संबंधित है जैसे प्रशंसा करना, छात्रों की भावनाओं और विचारों को स्वीकार करना, आलोचना करना, मार्गदर्शन करना और छात्रों को गतिविधियों के लिए स्वतंत्रता प्रदान करना। तीसरा गतिविधि से संबंधित, है जैसे निर्देश और मार्गदर्शन देना, प्रदर्शन करना, प्रयोगात्मक तकनीकों का ज्ञान प्रदान करना। उपरोक्त तीन स्तरों में से भावनात्मक स्तर का मौखिक व्यवहार बहुत महत्वपूर्ण है। एक अन्य दृष्टिकोण से मौखिक व्यवहार को दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। प्रत्यक्ष व्यवहार और अप्रत्यक्ष व्यवहार।

(क) प्रत्यक्ष मौखिक व्यवहार

वह मौखिक व्यवहार जिसका छात्रों पर सीधा प्रभाव पड़ता है, प्रत्यक्ष मौखिक व्यवहार कहलाता है। इसमें शिक्षक द्वारा व्याख्यान देना, प्रश्न पूछना, निर्देश देना और आलोचना जैसी शिक्षण गतिविधियाँ शामिल हैं। शिक्षक के प्रत्यक्ष व्यवहार को भी भिन्न–भिन्न शोधार्थियों ने उसकी प्रकृति के अनुसार भिन्न–भिन्न नामों से सम्बोधित किया है जैसे सत्तावादी, हावी (Dominative), बंद (छात्रों के साथ खुलकर बातचीजत न कर सकने वाला व्यवहार), शिक्षक केंद्रित आदि (एंडरसन, 1945–1946, नुथैल और लॉरेंस, 1965, सिंह, 1969, फ्लैंडर्स, 1970, गैमेज, 1971, कक्कड़, 1947, गुप्ता, 1975)। अपने शिक्षण के दौरान, शिक्षक अपने प्रभाव और अधिकार को

स्थापित करने का प्रयास करता है। वह अपने छात्रों के विचारों और व्यवहारों की आलोचना करता है। छात्र अपने विचार व्यक्त करने के लिए स्वतंत्र नहीं हैं। शिक्षकों के इस तरह के व्यवहार को ''फ्लैंडर्स द्वारा'' प्रत्यक्ष व्यवहार कहा गया है, एंडरसन इसे तानाशाही कहते हैं और लिपिट एवं व्हाइट इसे ''ऑटोक्रेटिक'' और विटवॉल इसे ''शिक्षक केन्द्रित'' कहते हैं। प्रत्यक्ष मौखिक व्यवहार के शिक्षण के दौरान छात्रों को सक्रिय होने का पर्याप्त अवसर नहीं मिलता है। छात्रों को स्वतंत्र रूप से अपने विचार व्यक्त करने का अवसर देने के बजाय, शिक्षक अपने विचारों और मूल्यों को छात्रों पर थोपने का प्रयास करता है। इसमें अध्यापन गैर–मनोवैज्ञानिक हो जाता है जहां छात्र की कार्य क्षमता कम हो जाती है।

(ख) अप्रत्यक्ष मौखिक व्यवहार

अप्रत्यक्ष मौखिक व्यवहार में शिक्षक, छात्रों को अपना पक्ष रखने का, एवं अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने का, पूरा मौका मिलता है। अपने बिचार एवं अपना पक्ष छात्रों के उपर थोपने की बजाए, अप्रत्यक्ष मौखिक व्यवहार में शिक्षक, छात्रों से प्रोत्साहपूर्ण सवाल पूंछते हैं और उसके विचारों, उनकी भावनाओं को स्वीकार करके, उनकी गतिविधियों की प्रशंसा करते हैं, और प्रश्न अपने छात्रों को सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए अधिक से अधिक सवाल पुछते हैं, इस तरह के व्यवहार को फ्लैंडर्स द्वारा अप्रत्यक्ष मौखिक व्यवहार के रूप में जाना जाता है। एंडरसन ने इसे इंटीग्रेटेड व्यवहार कहा और लिपिट एवं व्हाइट ने इसे 'समाजवादी व्यवहार' कहा।

अमौखिक व्यवहार

शिक्षक का मौखिक व्यवहार के अलावा कक्षा में जो भी व्यवहार होता है, अमैखिक व्यवहार कहलाता है। के हिस्से में उसके हावभाव, भ्रम के संकेत, जलन शामिल हैं। इसके अन्तरगत भौंहों की हरकत, अभिनय, नजर, मूक प्रदर्शन, सिर हिलाना, हाथों द्वारा प्रदर्शन आदि व्यवहार आते हैं। अधिकांश शिक्षक व्यवहार पढ़ाने में मौखिक होते हैं, हालांकि कुछ शिक्षक अमौखिक व्यवहार भी अपनाते हैं, वह अपने छात्रों को अपने इशारों, चेहरे के भावों आदि से गतिविधियों को करने के लिए संकेत करते हैं। हाल के वर्षों के अनुसंधान मे फ्लैंडर्स (1948) के काम का अनुसरण किया गया है और शिक्षक–छात्र की मौखिक बातचीत पर जोर दिया है, संभवतः यह इस धारणा को बल देता है कि एक शिक्षक का मौखिक व्यवहार उसके कुल व्यवहार का पर्याप्त नमूना है, हाइमन (1968)। लेकिन गैलोवे (1966) ने शिक्षक–छात्र बातचीत के गैर–मौखिक पहलुओं के बारे में और शोध करने को बल दिया। पिछले कुछ दशकों में, गैर–मौखिक शिक्षण व्यवहार के महत्व को उजागर करने वाली पुस्तकों और लेखों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है (आर्गाइल, 1969, गोफमैन, 1971, एल्ब्स फेड, 1970, फास्ट, 1970, ब्रोफी, 1973, सिग्लर और डरलेगा 1974, होरे, 1976)।

समस्या की उत्पत्ति

देश में आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों में तेजी से बदलाव के कारण और कक्षा शिक्षण में व्यावसायिक मनोविज्ञान और शैक्षिक प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग के परिणामस्वरूप हमें सुपीरियर, जुझारू और प्रभावशाली शिक्षकों की आवश्यकता है। इसलिय यिह जानना आवश्यक है कि शिक्षक बनने हेतु कौन सही व्यक्ति है? और स्कूल के शिक्षक के लिए किस प्रकार के व्यक्ति की आवश्यकता है? यह जानने की भी आवश्यकता है कि भावी शिक्षकों के प्रशिक्षंण के लिए किस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों को तैयार करने की आवश्यकता है? इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए शिक्षक व्यवहार के क्षेत्र में अधिक व्यवस्थित शोध करने की आवश्यकता है, ताकि सफल शिक्षण के महत्वपूर्ण निर्धारकों की पहचान की जा सके। लेकिन दुर्भाग्य से, शिक्षण और शिक्षक व्यवहार के क्षेत्र को अभी तक शोधकर्ताओं के हाथों उचित तबज्जों नहीं मिली है।

शिक्षण व्यवहार मानव व्यवहार के सबसे प्रतिष्ठित और विशिष्ट समूह के रूप में सामने आता है। यद्यपि हम मानव जाति और सभ्यता की शुरुआत से ही इस तरह के व्यवहार में संलग्न रहे हैं, इसका वैज्ञानिक अध्ययन या विश्लेषण अपेक्षाकृत नया है। ''शिक्षण व्यवहार'' की अवधारणा तुलनात्मक रूप से एक नई प्रविष्टि है। इसके पैरामीटर बड़े पैमाने पर शिक्षण के औपचारिक संदर्भों के विश्लेषण से प्राप्त किए गए हैं। 1930 के दशक तक शिक्षक के व्यवहार पर ध्यान नहीं दिया गया। केवल लिपिट एंड व्हाइट (1938), एंडरसन (1939), विथल (1949), फ्लैंडर्स (1951) और कैगन (1958) के द्वारा ही शिक्षण व्यवहार का अध्ययन करने के लिए गंभीर प्रयास किए गए थे। 'शिक्षण व्यवहार' की अवधारणा दो अवधारणाओं 'शिक्षण' और सीखने के विश्लेषण से ली गई है। ''शिक्षण' और 'सीखने' की प्रकृति को दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक या समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों के संदर्भ में समझाया जा सकता है।

शिक्षक के गुंण, स्वभाव

शिक्षकों के क्या प्रमुख गुंण होने चाहिए इसके संदर्भ में पाण्डेय (1997) के अनुसार–

1. कोई भी शिक्षण व्यवहार, उच्च बौद्धिक प्रक्रिया से उत्पन्न होता है और इसलिए यह उच्च ज्ञांन से संबन्धित है।

2. शिक्षण व्यवहार, दूसरों के प्रति उसके व्यवहार से संबन्धित होता है और यह इस पर भी निर्मित है कि शिक्षक अपने व्यवहार से दूसरों को किस प्रकार प्रभावित करना है।

3. शिक्षण व्यवहार, सामाजिक–सांस्कृति के अनुसार होता है और इसमें एक स्पष्ट सामाजिक झलक प्राप्त होती है। एक व्यक्ति का शिक्षण व्यवहार उचित है, इसे जांचने के लिए किसी अन्य व्यक्ति की शिक्षंण के समय उपस्थिति आवश्यक है।

4. गहन शिक्षण व्यवहार तार्किक लेक्चरों के समूहों द्वारा बनता है।

5. किसी विशिष्ट लक्ष्य के रूप में, शिक्षण व्यवहार किसी विशेष लक्ष्य को सिखाने के लिए, विशेष रूप से तैयार किया जाता है।

6. शिक्षण व्यवहार, बौद्धिक शक्ति और व्यक्तित्व पर निर्भर है, जो व्यक्ति के अन्दर पैदायिशी होती हैं। इसलिए एक समान लक्ष्य की प्राप्ति के उद्देश्य से एक ही संदर्भ के लिए शिक्षण व्यवहार की अभिव्यक्ति में परिवर्तनशीलता को देखा जा सकता है। यह आमतौर पर पाठों को पढ़ाने की शैली के रूप में गठित किया जाता है।

निष्कर्ष

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि शिक्षण व्यवहार बुद्धि का स्तर, व्यक्तित्व का प्रकार, पेशेवर प्रशिक्षण की गुणवत्ता, सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभाव, व्यक्ति के स्वभाव और अकादमिक लोकाचार आदि पर निर्भर होता है। शिक्षण व्यवहार का दायरा, शिक्षक और विद्यार्थियों के स्तर पर, गतिविधियों और संचालन तक सीमित किया जा सकता है, जिसमें विभिन्न कौशल जैसे संज्ञानात्मक, सामाजिक, प्रबंधकीय आदि और इसके संशोधन के लिए नियोजित रणनीतियों तक सीमित है। 'शिक्षक व्यवहार' में शिक्षण व्यवहार शामिल हो सकता है, जिसमें शिक्षण के विशिष्ट लक्ष्यों की खोज के लिए प्रासंगिक सभी प्रकार की गतिविधियाँ और संचालन शामिल हो सकते हैं। शिक्षक का कक्षा व्यवहार कई कारकों द्वारा निर्धारित किया जाता है जैसे रवैया, योग्यता, शैक्षणिक योग्यता, कौशल, ग्रेड स्तर, शिक्षण विधियाँ, शिक्षण विषय आदि। विभिन्न प्रकार के शिक्षकों के मामले में शिक्षकों का कक्षा व्यवहार भिन्न होता है जो उनकी विशेषताओं से प्रभावित होता है। इसकी कोई जांच उपलब्ध नहीं हैं।

संदर्भ

1. Abraham, A. (1994) : Job Satisfaction and teacher effectiveness: Astudy on college teachers. Indian Educational Abstracts, Issue-3, Jul-1997.
2. Agarwal, V.P. (1973) :A study of the relationship between teacher behaviour and pupils achievement. Unpublished M. Ed. dissertation, University of Rajasthan.
3. Bane, RB. (1969) : A study of role conflict and its correlation with job satisfaction of secondary school women teachers :A comparative study in Dibrugarh District. Ph.D. Edu. Dibrugarh univ.
4. Alexender, W.F. (1970) Personality : A psychological interpretation, New York.

5. Alport. GW.&Kahn JH. (1971) : Human growth and the development of personality Ind.
6. Hunter, E. (1967): Improving teaching: The analysis of dassroom verbal interaction. Holt Rinehart and Winston, New York, London.
7. Flanders, NA (1965) Teacher infuence pupil attnude and achevement Cooperative Research Monograph No. - 12. US. Govt. Printing Office Washington.
8. Grontund, NE. (1965) Measurement and evaluation in teaching New York. The Mc. Millon Co.
9. Gronlund, N.E (1970) Stating behavioural objectives for dlassroom instruction. Mac Milan company, London